रात्रिक्लास 9/6/68 ओमशान्ति बापदादा और वर्सा याद है?

तुम बच्चे हो विश्व के श्रृंगार। सतयुग में नहीं कह सकते। यह अभी कह सकते हैं। जो भी बच्चे हैं सभी विश्व को श्रृंगार कराने वाले हैं। जैसे बाप की महिमा अपरम–अपार, वैसे तुम भी जो श्रृंगार कराते हो तुम्हारी भी महिमा है। मुख्य श्रृंगार तुम बच्चे हो। देवताओं को भी इतनी खुशी नहीं जितनी कि तुमको रहनी चाहिए। हम अपने मोस्ट बिलवेड बाप के साथ हैं, वह हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। सृष्टि भर में तुम्हारे जैसा पद्म भाग्यशाली कोई नहीं है। तुम सारे विश्व का कल्याण करते हो। तुम प्रभात फेरी आदि करते हो जानते हो विश्व के कल्याण लिए। तुम सारे विश्व के कल्याणकारी बच्चे हो। जो मेहनत करते उनको नशा चढ़ता है। नशे कारण ही मेहनत करते हैं। देश की सेवा करने वाले सोशल वर्कर्स तो बहुत हैं। तुम हो स्प्रीच्युअल फादर के बच्चे। तुम्हारी भी महिमा अपरमअपार है। तुम सभी को कह सकते हो हम श्रीमत पर भारत की रूहानी सेवा कर रहे हैं। जिस्मानी सेवा और रूहानी सेवा में रात दिन का फ़र्क है। भारत की हम सच्ची रूहानी सेवा कर रहे हैं। रूह ही तमोप्रधान बना है उनको ही सतोप्रधान बनाना है। बाप को याद करने से ही आत्मा को सतोप्रधान बनना है। पहले2 यह है सबक़। हम बाप का पैगाम देते हैं। अभी तमोप्रधान दुनिया है, सतोप्रधान थी। अभी पुरानी है। फिर नई बनाने लिए बाप को आना पड़ता है। बाप को याद करने से ही शक्ति आती है। जिससे हम सतोप्रधान बन जाते हैं। सभी चित्रों का तन्त है यह। बाप सभी बच्चों को कहते हैं अपने को आत्मा समझो। सभी भाई–भाई हैं। सतयुग में सतोप्रधान थे। कलियुग में तमोप्रधान बने हैं। अभी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। यह तो बहुत ही सहज है। बाप का वर्सा अभी बच्चों को मिल रहा है। बाप को जान लेंगे तो फिर खुशी से सुनते रहेंगे। नहीं तो अपनी टां–टां करते रहेंगे। यह भी सभी ड्रामा में नूंध है। तुम जो सर्विस करके आये कल्प पहले मिसल ए वन। ड्रामा चलता रहता है। निश्चय है दुनिया बदली तो होना ही है। कब दिलगीर न रहना है। कोई ने समझा न समझा। कोई लड़ते भी हैं बकवाद भी करते हैं। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।